फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 74 संख्याः 266 प्रभात जयपुर, रविवार 28 अप्रेल, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

The Pilkhan Tree...

"How did she learn to dream of love and desire? Was it from the legends of Krishna intricately drawn on the walls? Was it her prayers which held hidden meaning in pursuing the call of the flute?"

Pinhole Photography

Magic Mushrooms

बाड़मेर में कांग्रेस के उम्मेदाराम बेनीवाल के जीतने की भारी संभावना

यह संभावना पूर्व मु.मंत्री गहलोत को रास नहीं आ रही?

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 अप्रेल। राजस्थान में मतदान के दूसरे चरण में, जिसमें 13 लोकसभा सीटों के लिए मतदान हुआ, उनमें से बाड़मेर ही ऐसी सीट है जिस पर कांग्रेस को जीत का पूरा विश्वास है। लेकिन, इस संभावित विजय के पीछे और भी बहुत कुछ है। राजस्थान कांग्रेस के सूत्रों का कहना है कि, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और उनकी टीम ने बाड़मेर में कांग्रेस प्रत्याशी उम्मेदाराम बेनीवाल की हार सुनिश्चित करने के लिए हर तरह के हथकण्डे अपनाए।

सूत्रों का कहना है कि, अपने पुत्र वैभव गहलोत की जीत सुनिश्चित करने के लिए, अशोक गहलोत ने कांग्रेस पार्टी को भारी नुकसान पहुँचाया है, क्योंकि, जोरदार चर्चा यह है कि, वैभव गहलोत बहुत बड़े अंतर से हार रहे हैं। अशोक गहलोत पड़ोसी लोकसभा सीट बाड़मेर के कांग्रेस प्रत्याशी उम्मेदाराम बेनीवाल की हार सुनिश्चित करना चाहते हैं, क्योंकि, तब हाई कमान को वैभव की हार को समझाना आसान हो जाएगा, क्योंकि तब वे कह सकेंगे कि केवल जालोर में ही नहीं, पूरे मारवाड़ में कांग्रेस हारी है।

सूत्रों का कहना है कि, कांग्रेस के नेताओं ने, बाड़मेर में अशोक गहलोत की भूमिका से केन्द्रीय नेतृत्व को अवगत करवा दिया है, और दिल्ली में अशोक गहलोत के अनेक शुभचिंतक होने के बावजूद, पार्टी नेतृत्व बहुत गंभीरता से अशोक गहलोत की भूमिका पर नज़र रखे हुए है।

- **ऐसी चर्चा है कि, गहलोत चाहते थे, वैभव तो हार ही रहे हैं जालोर से, अतः अगर पड़ोसी सीट पर बाड़मेर में भी कांग्रेस का उम्मीदवार हार जाये तो हाई कमान को वैभव की हार को समझाना आसान हो जायेगा, क्योंकि केवल जालोर में ही नहीं पूरे मारवाड़ में कांग्रेस हारी है।**
- **चर्चाओं के अनुसार, इस सोच के तहत ही अशोक गहलोत की टीम बाड़मेर में निर्दलीय उम्मीदवार रविन्द्र सिंह भाटी के पक्ष में काम कर रही थी और इसीलिये बालेन्दु सिंह शेखावत व अमीन खान प्रतीकात्मक तौर पर रविन्द्र सिंह भाटी की मदद कर रहे थे।**
- **पर, उम्मेदाराम बेनीवाल को जाटों के, अल्पसंख्यकों के तथा एस.सी. के वोट भारी संख्या में मिले हैं। अतः वे जीत के नज़दीक माने जाते हैं।**
- **हनुमान बेनीवाल, उनके पुराने पार्टी के साथी व सदस्य उम्मेदाराम के पक्ष में प्रचार करने नहीं गये तथा आमसभा में मंच से अपने समर्थकों को कहा, जहां मैं गठबंधन के बावजूद प्रचार करने नहीं जा रहा हूँ, वहां आपको समझ लेना चाहिये कि, मैं उस उम्मीदवार का समर्थन नहीं कर रहा हूँ। उस मंच पर गहलोत भी मौजूद थे।**
- **चर्चा के अनुसार हाई कमान भी गहलोत की इस तथाकथित विवादास्पद भूमिका से काफी वाकिफ है।**

माना जाता है कि, अशोक गहलोत के नज़दीकी कांग्रेस नेताओं ने, सोशल मीडिया पर छाए, बाड़मेर से निर्दलीय प्रत्याशी रविन्द्र सिंह भाटी के लिए प्रचार करने और उनके लिए वोट मांगने के लिए भारी मेहनत मशक्कत की है। कहा जा रहा है कि, अमीन खान, मेवा राम जैन, मदन प्रजापत, बालेन्दू सिंह शेखावत, अशोक गहलोत टीम के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर चुनाव जीतने में भाटी की मदद कर रहे थे।

रोचक बात यह है कि, इन समस्त प्रयासों के बावजूद कांग्रेस प्रत्याशी उम्मेदाराम बेनीवाल, जाटों, अनुसूचित जाति तथा अल्पसंख्यकों के अच्छे खासे वोट लेने में सफल रहे और ये लोग भारी संख्या में उम्मेदाराम के लिए वोट डालने आए। बेनीवाल की जीत की संभावना अच्छी लग रही है। रोचक यह भी है कि, आर.एल.पी. के हनुमान बेनीवाल, जिन्हें नागौर में कांग्रेस ने समर्थन दिया और जिनको समर्थन देने के लिए अशोक गहलोत ने नई दिल्ली में एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया था, ने एक जनसभा में घोषणा की कि, उनके समर्थकों को यह समझ लेना चाहिए कि, गठबंधन होने के बावजूद भी अगर कहीं वो नहीं जा रहे हैं , इसका मतलब है कि वो उस प्रत्याशी का समर्थन नहीं कर रहे हैं।

गहलोत उस मंच पर उपस्थित थे, जहाँ से हनुमान बेनीवाल ने यह वक्तव्य दिया। बाद में यह स्पष्ट किया गया कि, हनुमान बेनीवाल और उनकी पार्टी भाजपा प्रत्याशी कैलाश चौधरी को समर्थन दे रहे थे क्योंकि वो कांग्रेस प्रत्याशी से खुश नहीं थे। असल में उम्मेदाराम पूर्व में आर.एल.पी में ही थे। वे हाल ही में कांग्रेस में आए थे।

ऐसे में अशोक गहलोत और हनुमान बेनीवाल के प्रति उनके प्रेम के बारे में क्या ही कहा जाए। अपनी स्वयं की पार्टी के प्रत्याशी को हराने के लिए पार्टी के आदरणीय नेता इस तरह व्यवहार करते हैं। इस कहानी की अगली कड़ी अगले कुछ दिनों में आएगी।

भूखंड का कब्जा नहीं दिया, जे.डी.ए. पर 25 हजार रूपए का जुर्माना

जयपुर, 27 अप्रेल (का.सं.)। जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर-प्रथम ने 14 साल में भी अमृत कुंज योजना की लॉटरी में निकले आवासीय भूखंड का कब्जा आवंटी को नहीं देने को गंभीर सेवादोष करार दिया है। आयोग ने भूखंड का कब्जा नहीं देने पर जे.डी.ए. पर 25 हजार रुपए का जुर्माना लगाते हुए कहा कि विपक्षी के सेवादोष के कारण परिवादी अपनी बड़ी जमा राशि के उपयोग से भी वंचित रहा है।

- **जिला उपभोक्ता आयोग जयपुर प्रथम ने कहा कि, अमृत कुंज योजना में लॉटरी में निकला भूखंड 14 साल में भी आवंटी को नहीं दिया जाना जे.डी.ए. का गंभीर सेवादोष है।**

उपभोक्ता आयोग ने जे.डी.ए. को जमा राशि 9,87,800 रुपए 16 जून 2021 से 6 प्रतिशत ब्याज सहित लौटाने का निर्देश दिया है। आयोग के अध्यक्ष सूबेसिंह यादव व सदस्य नीलम शर्मा ने यह आदेश मनफूल बैरवा के परिवाद पर फैसला सुनाते हुए दिया।

परिवाद में कहा गया है कि, जे.डी.ए. ने वर्ष 2010 में कालवाड़ रोड पर आवासीय योजना अमृत कुंज में भूखंड आवंटन के लिए आवेदन मांगे। इसमें परिवादी ने भी आवेदन किया और 8 सितम्बर, 2010 को लॉटरी से उसे 225 वर्गमीटर का भूखंड

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अजमेर में भाजपा के भागीरथ चौधरी का पलड़ा भारी, शानदार जीत की ओर अग्रसर

गहलोत की ज़िद ने अजमेर सीट भाजपा की झोली में डाली

अजमेर, 24 अप्रेल (कासं)। राजस्थान में दूसरे चरण का मतदान शुक्रवार को सम्पन्न हुआ। दूसरे चरण में अजमेर लोकसभा क्षेत्र से 14 उम्मीदवार चुनावी मैदान में थे लेकिन सीधा मुकाबला भाजपा के भागीरथ चौधरी व कांग्रेस के रामचन्द्र चौधरी के बीच था।

अजमेर की नसीराबाद व अजमेर उत्तर ऐसी विधानसभा सीटें हैं जहां कई गांव गुर्जर बाहुल्य हैं और सचिन पायलट की वजह से वो लोग कांग्रेस को वोट करते हैं। लेकिन वर्तमान लोकसभा चुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पांच बार चुनाव हारने वाले, अजमेर डेयरी के अध्यक्ष रामचन्द्र चौधरी को उम्मीदवार बनाया। इसे अशोक गहलोत की हठधर्मिता ही कही जाएगी कि, अशोक गहलोत ने सचिन पायलट को अजमेर में प्रचार के लिए आने नहीं दिया। सचिन पायलट के नहीं आने के कारण कांग्रेस अपने जीत के दावे से दूर होती हुई नज़र आ रही है। वैसे अजमेर के गुर्जर मतदाता परम्परागत रूप से भाजपा के पक्ष में रहते हैं लेकिन सचिन पायलट के कारण गुर्जर वोटरों ने 2018 के विधानसभा चुनाव में एक तरफा कांग्रेस को मतदान किया था। इसके बाद जब कांग्रेस संगठन द्वारा सचिन पायलट की अनदेखी की जाने लगी तो गुर्जर कांग्रेस से दूर होते हुए नज़र आने लगे हैं।

दूसरी ओर भाजपा द्वारा जिले के गुर्जर नेता ओमप्रकाश भडाणा को देवनारायण बोर्ड का अध्यक्ष बनाने के बाद भडाणा ने गुर्जरों को भाजपा के समर्थन में लाकर खड़ा करने में खासी सफलता हासिल की है। कांग्रेस ने भाजपा के राजपूत और रावत वोट बैंक में सेंधमारी के जतन भी किए, लेकिन पुष्कर विधायक सुरेश रावत को केबिनेट मंत्री बनाने के कारण रावत वोटर्स का रूख भी भाजपा की और नज़र आ रहा है।

- **गहलोत ने इस गुर्जर बहुल सीट से जानबूझकर अपने करीबी और 5 बार चुनाव हार चुके रामचन्द्र चौधरी को टिकट दिलवाया, पर वे अपनी कोई छाप नहीं छोड़ पाए।**
- **गहलोत ने क्षेत्र से सचिन पायलट को दूर रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पायलट की उपेक्षा से क्षेत्र के गुर्जर पहले से ही नाराज हैं, इसलिए उन्होंने भाजपा के प्रति अपना रूझान दर्शाया।**
- **मतदान प्रतिशत कम होना भी कांग्रेस की मुश्किलें बढ़ा रहा है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में ही कम मतदान हुआ है। शहरी क्षेत्र में मतदान अच्छा हुआ।**

अजमेर लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस व भाजपा दोनों के प्रत्याशी जाट समुदाय के हैं। साथ ही कांग्रेस का दावा था कि, जाट मतदाता उनके पक्ष में मतदान करेंगे। लेकिन, जाट मतदाता भी हवा का रूख भांपते हुए भाजपा की ओर नज़र आ रहे हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में पुष्कर विधानसभा क्षेत्र के बलवंता से कांग्रेस को बढ़त मिली थी लेकिन पिछले लम्बे समय से वहाँ पेयजल की समस्या के चलते ग्रामीणों ने शुकवार को मतदान का बहिष्कार कर दिया था, पूरे गांव में मात्र 37 वोट ही डाले गए। वहाँ भी कांग्रेस को नुकसान होता हुआ नज़र आ रहा है।

पिछले लोकसभा चुनाव में हुए 67 प्रतिशत मतदान के मुकाबले इस बार करीब 8 प्रतिशत मतदान कम हुआ है। कम मतदान प्रतिशत भी कांग्रेस के माथे पर चिंता की लकीरें बढ़ा रहा है। क्योंकि एस.सी. व एस.टी. बाहुल्य दूदू विधानसभा सीट पर पिछली बार के मुकाबले करीब 10 प्रतिशत मतदान घटा है। एस.सी. व एस.टी. वर्ग को कांग्रेस के पक्ष का माना जाता है। दूदू, वर्तमान भाजपा सरकार में उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचन्द्र बैरवा का विधानसभा क्षेत्र भी है। गुर्जर बाहुल्य नसीराबाद विधानसभा क्षेत्र में भी 10 प्रतिशत मतदान घटा है।

ज्ञातव्य है कि, सन् 2018 में पूर्व केन्द्रीय मंत्री सांवरलाल जाट के निधन के बाद रिक्त हुई अजमेर लोकसभा सीट

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

एक बार फिर ममता बनर्जी चुनाव से पूर्व गिरकर घायल हुई!

इतनी बार ऐसा हादसा हुआ है ममता जी के साथ कि, चर्चा है कि, यह शगुन है। इस बार वे उस हैलीकॉप्टर में ही गिरीं, जिसमें वे यात्रा कर रही थीं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 27 अप्रेल। तृणमूल कांग्रेस आदतन अपराधियों को शरण दे रही है। एक के बाद एक अपराध सामने आ रहे है, जिनके नेता लिप्त है और जनता के पैसे का गबन कर रहे हैं, यही नहीं नियुक्तियों में हुए फ़जीवाड़े को ढकने में लगे हैं।

भ्रष्टाचार और अपराधिक कारनामे ही पर्याप्त नहीं थे, अब तो हथियारों और अस्ले का जखीरा भी एक तृणमूल नेता के घर से मिला है जिसे शेख शाहजहाँ का करीबी माना जाता है।

केन्द्रीय एजेंसियों ने एन.आई.ए. के साथ मिलकर विदेश में बनी पिस्तौलें, बंदूकें व अन्य हथियार संदेशखाली से बरामद किये हैं। राज्य सरकार ने कोर्ट के एक ऑर्डर का भी विरोध किया है जिसमें तृणमूल के कार्यकर्ताओं द्वारा ज़मीन हड़पने, यौन उत्पीड़न व हफ्ता वसूली जैसे आरोपों की जाँच करने का निर्देश दिया गया है।

- **दूसरी ओर संदेशखाली में शेख शाहजहां के सहयोगी के घर से एन.आई.ए. ने हथियारों का जखीरा प्राप्त किया है, जिसमें विदेश में निर्मित पिस्तौल, बंदूकें, आदि शामिल हैं।**
- **ऐसी चर्चा है कि, यह जखीरा एन.आई.ए. की प्रथम ''रेड'' के समय उनके घर में मौजूद था और इसीलिये एन.आई.ए. की टीम पर हमला बोला गया था तथा मार पिटाई की गयी थी, जिससे एन.आई.ए. की टीम शेख शाहजहां के घर तक न पहुंच जाये।**

माना जाता है कि जब सी.बी.आई. और ई.डी. ने पहली बार संदेशखाली में रेड की थी तब हथियारों का यह जखीरा शेख शाहजहाँ के घर में था और इसीलिए उसने जाँच दल पर सुनियोजित तरीके से हमला करवाया ताकि वह हथियारों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सिख समाज की एक हजार प्रमुख हस्तियों ने भाजपा जॉइन की

नई दिल्ली 27 अप्रैल (वार्ता) दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति के सदस्यों और सिख समुदाय के प्रमुख नेताओं सहित लगभग 1,000 से अधिक प्रतिष्ठित हस्तियों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

- **दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी के सदस्य भूपेन्द्र सिंह गिन्नी, रमनदीप सिंह थापर, परविंदर सिंह लक्की, मंजीत सिंह औलख, रमनज्योत सिंह, जैस्मीन सिंह नौनी और हरजीत सिंह पप्पा ने भाजपा जॉइन की।**

भाजपा के केन्द्रीय कार्यालय में एक कार्यक्रम में पार्टी अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा जी के समक्ष भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। इस अवसर पर पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जालोर-सिरोही लोकसभा सीट से हार रहे हैं वैभव गहलोत

करोड़ों रूपए खर्च करके भी मतदाता को बूथ तक नहीं ला पाए अशोक गहलोत

जालोर, 27 अप्रेल (कासं)। जालोर - सिरोही लोकसभा क्षेत्र पर प्रदेशभर की नजरें गड़ी हुई हैं। इस सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं। लेकिन इस लोकसभा सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री का जादू चल नहीं पाया है। गत चुनाव की तुलना में इस बार मत प्रतिशत घटा है। लेकिन प्रवासियों ने मत प्रतिशत को बढ़ाने का प्रयास किया है। हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों की तुलना में लोकसभा चुनाव में जालोर - सिरोही की आठों विधानसभा सीटों में से मात्र एक, जालोर विधानसभा सीट पर ही मत प्रतिशत बढ़ा है। शेष जगह मत प्रतिशत कम रहा है। गहलोत ने प्रचार प्रसार में करोड़ों रुपए खर्च किये, लेकिन वे मतदाताओं को मतदान केन्द्र पर पहुंचने में विफल रहे। जालोर -सिरोही में साठ प्रतिशत से अधिक मतदान होना भाजपा प्रत्याशी के लिए राहत की खबर है।

- **पूर्व मुख्यमंत्री ने बेटे के लिए प्रचार में करोड़ों रूपए खर्च किए, पर उनके प्रचार में शो ऑफ ''ज्यादा'' रहा, जबकि भाजपा ने बूथ स्तर पर सुव्यवस्थित प्रचार किया और मतदाताओं को घर से निकलकर मतदान केन्द्र तक पहुंचाया।**
- **वैभव के प्रचार में गहलोत को अपने धन बल पर भरोसा इतना ज्यादा था कि, उन्होंने सचिन पायलट के जालोर आने में भी रोड़ा अटकाया, जबकि कहा जा रहा है कि, अगर पायलट आते तो वैभव को कुछ फायदा हो सकता था।**
- **जालोर-सिरोही लोकसभा सीट में 8 विधानसभा क्षेत्र आते हैं, इनमें से मात्र जालोर सीट पर ही वोट प्रतिशत बढ़ा है। बाकी जगहों पर वोटिंग कम रही। जालोर में ज्यादा वोटिंग की भाजपा के लिए फायदे का सौदा है।**

जालोर - सिरोही लोकसभा सीट पर गत चुनाव की तुलना में करीब तीन प्रतिशत कम मतदान हुआ है। 2019 में 65.74 प्रतिशत मतदान हुआ था, उसकी तुलना 2024 में 62.89 प्रतिशत मतदान हुआ। जालोर में दोपहर 1 बजे तक मत प्रतिशत 41.47 प्रतिशत था, उसके बाद पांच घंटों में मत प्रतिशत 62.89 हो गया।

पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने जालोर- सिरोही सीट पर करोड़ों रूपये प्रचार में खर्च किये, लेकिन उनके प्रचार में दिखावा ज्यादा रहा। दूसरी तरफ भाजपा ने बूथ लेवल से लेकर जमीनी स्तर पर मतदाताओं को मतदान केन्द्रों तक पहुंचाने का कार्य किया। यह सीट चौधरी बाहुल्य है और शादी का सीज़न होने के कारण बड़ी संख्या में प्रवासी जालोर -सिरोही पहुंचे हैं। इसमें से अधिकतर चौधरी, देवासी, राजपुरोहित जाति के मतदाता हैं। जो भाजपा के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)